दिनाँक :- 10-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज झरमंगा (~~अतिथि शिक्षक~~)

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़मा (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

एकाई :- प्रथम

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- मौर्योत्तरकाल स्त्रोत

कापालिक सम्प्रदाय एक अतिमार्गी सम्प्रदाय है जिस का इस्टदेव भैरव है जो कि शंकर के ही अवतार माने जाते है। कापालिक सम्प्रदाय के अनुयायी इन्हे ही सृष्टि का सर्जक तथा संहारक-र्ता मानते है। इस सम्प्रदाय के अनुयायी गले में रुद्राक्ष धारण करना, शरीर पर शमशान की भस्म मलना, हाथ में नर कपाली का

कमंडल रखना अपने साधान का अंग समझते थे।

इस सम्प्रदाय के अनुयायी पुरुष अपने को भैरव तथा अपने को भैरवी के रूप में कल्पित कर स्वच्छंद रति क्रिया को भी साधना का ही अंग मानते हैं।

मालती माधव नाटक के रचयिता भवभूति ने श्रीशैल को कापालिकों का प्रधान पीठ बतलाया है।

रामनुज के अनुसार कापालिकों के मोक्ष प्राप्ति के लिये प्रस्तुत 6 मुद्राएं आवश्यक हैं।

1. कर्णिका 2. रूचक 3. कुण्डल
4. शिखमणि 5. भस्म 6. यज्ञोपवीत

कालमुख सम्प्रदाय कापालिका सम्प्रदाय का ही और अधिक भयंकर रूप है।

शिवपुराण में इस सम्प्रदाय के अनुयायियों को महाव्रतधर कहा गया है।

शक शासक मोगा की मुद्राओं पर त्रिशूलधारी शिव अंकित है। उसी तरह गोण्डोफर्निज के कुछ सिक्कों पर

Scanned with CamScanner

त्रिशूलधारी शिव अंकित है। इसके सिक्को पर नंदी त्रिशुल तथा शिव का चित्र अंकित किया गया है। कुषाण शासक विम कदफिसस के सिक्को पर नंदी त्रिशुल तथा शिव का चित्र अंकित है। उसने अपने को महेश्वर कहा है।

केन उपनिषद में शिव की पत्नी उमा को उच्च स्थान दिया गया है।

कुमारगुप्त के समय शिव के साथ पार्वती भी जुड़ गई। कुमारगुप्त के सिक्को पर मयूर पर बैठे कार्तिकेय की आकृति है। शिव के विभिन्न रूपो में दक्षिण की मूर्ति भी प्रचलित थी। इसमें शिव को सार्वभौमिक शिक्षक के रूप में दिखाया गया है। दक्षिण में शिव की पत्नी के रूप में मीनाक्षी को दिखाया गया है। वह पांड्य शासक की पत्नी थी।

सिकन्दर के इतिहासकारो ने शिव पूजको की चर्चा

की है तथा उन्हे 'शिवाई' कहा गया है। अतः माना जा सकता है कि पूर्वी भारत में ही नही बल्कि उत्तरी भारत मे भी शैव धर्म का प्रसार हुआ।

कश्मीर का शैववाद एक प्रकार से वेदांत अथवा अद्वैत वाद है जिसके अनुसार जीवात्मा तथा संसार एक ही है। यहाँ पर मुख्य रूप से त्रिकस्पंद तथा प्रत्याभिज्ञा सम्प्रदा का विकास हुआ।

प्रत्यभिज्ञा उपसंप्रदाय के संस्थापक वसुगुप्त थे और स्पंदशास्त्र उपसंप्रदाय के संस्थापक कुलात और सोमानंद थे।

मध्य भारत तथा दक्कन मे मत्तामयूर नामक उपसंप्रदाय विकसित हुआ। कलचुरि चेदी शासको के समय यह उत्थान पर था आगे चलकर कई और अन्य उपसंप्रदाय भी विकसित हुए। उदाहरण के लिए अघोर शिवाचार्य ने आगमन्त संप्रदाय को, श्रीकांत शिवाचार्य ने शुद्ध शैव को तथा अल्लम प्रभु तथा चेन्ना बासव ने वीर शैव को स्थापित किया।

वासव बिज्जल कल्चुरि के तहत एक मंत्री था।
मत्स्येन्द्रनाथ (मछेन्द्रनाथ) ने नाथपंथ की स्थापना की
यह भी शैव धर्म का ही एक उपसंप्रदाय था।
शैव एंव वैष्णव दोनो मत ईश्वरवादी तथा एकेश्वर
वादी थो जहाँ वैष्णव मत व्यक्ति के मानवीय एंव
भावनात्मक पक्ष को छुता था वही शैव दार्शनिक
एंव वैज्ञानिक विचारधारा पर अत्यधिक बल देता था।
लिंगायत मत के सिद्धान्त
निष्काम कर्म पर विश्वास करता है।
शिव को परम तत्व मानता है। वेद तथा जाति-पाति
का खंडन करता है। पुनर्जन्म के सिद्धान्त का खंडन
करता है। गुरु की महीमा का मानता है।
ग्रीक इतिहासकार के सियस ने कहा है कि पुरुषपुर
गंधार का देवता का मंदिर है संभवतः शिव का मंदिर
है।

Scanned with CamScanner

पतंजर अभिलेख (122 ई०) उत्तर पश्चिम के महावानक्षेत्र में एक शिव स्थल की चर्चा करता है।

मार्शल ने प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व में एक कांस्य मुद्रा तक्षशिला के सिरकप नामक स्थल से प्राप्त की। इस पर शिव की आकृति है। इंडो सिथियन (इंडोग्रीक) इंडो पर्थियन तथा कुषाण शासकों के सिक्कों पर भी शिव का चित्र है परंतु वह भी मानवीय रूप में है उनके साथ उनका पवित्र बैल नंदी भी है।

सभी कुषाण शासकों के सिक्कों पर शिव को अपनी पत्नी उमा के साथ जिसे दुर्गा या अम्बा कहा गया है चित्रित किया गया है।

पूर्व गुप्त काल के एक चतुर्मुखी लिंग की प्राप्ति मथुरा से हुई है जो सौम्य, शान्त, प्रसन्न एवं संहारकारी रूप में है।

पेरियपुराण में शिव के 63 भक्तों का उल्लेख है शिलप्पदिकारम में पंचाक्षर का उल्लेख है और

और मणिमेखलाई मे एक शैववादी का जिक्र है।
शैव धर्म मे से गणपति का पंथ ईसा की छठी सदी के आसपास उत्पन्न हुआ। गणपति का शाब्दिक अर्थ होता गणो के स्वामी। उत्तर वैदिक काल मे गणपति देवता का का सृजन हो चुका था और समकालीन तथा परवर्ती धर्म है। ग्रंथो में उनके विभिन्न नाम जैसे महाहस्ती एकदन्त, दन्ती तथा वक्रतुण्ड प्रयुक्त हुए है। इसी देवता को गणेश भी कहा गया है।
यद्यपि गणेश विघ्नहर्ता तथा मंगलमूर्ति माने जाते है तथापि अग्नि तथा वराह पुराण में गणेश को उद्देश्य पूर्ति मे विघ्न डालने वाला बताया गया है।
पतंजलि ने शिव स्कंद मे कार्तिकेय और विशाख की मूर्तिपूजा होने का उल्लेख किया है।
रामायण मे स्कंद को अग्नि तथा गंगा का पुत्र बतलाया।

Scanned with CamScanner